राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 2548

08 अगस्त, 2018 को उत्तर के लिए

स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड को हो रही हानि

2548. चौधरी सुखराम सिंह यादव:
श्री विशम्भर प्रसाद निषाद:

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) लगातार कई वर्षों से हानि का सामना कर रहा है;

(ख) गत पाँच वर्षों का 'सेल' के हानि/लाभ का ब्यौरा क्या है;

(ग) 'सेल' की हानि-लाभ का अंतर बढ़ने के क्या कारण है; और

(घ) इसके लाभ को पूर्व की भाँति पुनःस्थापित करने की दिशा में क्या कदम उठाए गए हैं और उनका प्रभाव क्या रहा है?

उत्तर

इस्पात राज्य मंत्री (श्री विष्णु देव साय)

(क): वर्ष 2008-09 से 2017-18 तक पिछले दस वित्तीय वर्षों के दौरान स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) को केवल वित्तीय वर्ष 2015-16, 2016-17 और 2017-18 में ही नुकसान हुआ है।

(ख): गत पाँच वित्तीय वर्षों में सेल की लाभ/हानि का विवरण निम्नानुसार है:-

(करोड़ रुपये में)

क्र.सं.	**वित्तीय वर्ष**	**कर-पूर्व लाभ(+)/हानि(-) (पीबीटी)**	**कर-पश्चात् लाभ(+)/हानि(-) (पीएटी)**
1.	2013-14	3225	2616
2.	2014-15	2359	2093
3.	2015-16	-7008	-4021
4.	2016-17	-4851	-2833
5.	2017-18	-759	-482

(ग): वित्तीय वर्ष 2014-15 और 2015-16 के दौरान भारत में होने वाले आयातों में वृद्धि हुई, जिसके फलस्वरूप चीन, कोरिया, जापान और सीआईएस जैसे इस्पात की अधिकता वाले देशों द्वारा आवश्यकता से अधिक आपूर्ति किए जाने और प्रीडेटरी मूल्य निर्धारण करने से घरेलू इस्पात उद्योग को जटिल चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इसके अतिरिक्त, सेल को वित्तीय वर्ष 2015-16 से 2017-18 तक निम्नांकित कारणों से भी हानि उठानी पड़ी थी:-

- इस्पात उत्पादों की बिक्री से कम शुद्ध प्राप्ति।
- आयातित कोयला मूल्यों में वृद्धि, विशेषकर 2016-17 से।
- डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन (डीएमएफ) और नेशनल मिनरल एक्सप्लोरेशन ट्रस्ट (एनएमईटी) में योगदान के लिए लेवी का विपरीत प्रभाव।
- स्वदेशी कोयले की कम उपलब्धता के कारण मिश्रण तैयार करने में आयातित कोयले का अधिक उपयोग।
- वेतन व मजदूरी में वृद्धि।
- उच्चतर ब्याज दरें और आवधिक जमा राशि पर ब्याज से प्राप्त होने वाली आय में कमी।
- नई सुविधाओं के पूँजीकरण के कारण उच्चतर ह्रास।

(घ): सेल ने अपने वित्तीय निष्पादन को सुधारने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए हैं:-

- कोयला, लौह-अयस्क, फ्लक्सेज आदि जैसे कच्चे माल के उपयोग के स्तर में कमी लाना और खानों में लौह-अयस्क एवं स्वच्छ कोयला उपलब्ध कराने की लागत में कमी लाना।
- उत्पादन अनुकूलन और उत्पाद-मिश्र में सुधार।
- प्रौद्योगिकी-आर्थिकी मापदंडों में सुधार और उत्पादन के अपेक्षाकृत कम-कुशल माध्यमों से उत्पादन को युक्तिसंगत बनाना।
- खर्चीले कार्यों की पहचान कर उन्हे बंद करना और अपशिष्ट प्रबंधन।
- विलंबित व्ययों पर दृढ़तापूर्वक नियंत्रण और प्रशासनिक व्ययों की विभिन्न मदों में कटौती।
- जिन मामलों में सुपुर्दगियाँ लंबित है, उन्हें प्राप्त करने की लागत को कम करने के लिए दीर्घकालीन संविदाओं की कीमतों के संबंध में पुनः बातचीत करना।
- फिनिश्ड/सेमी-फिनिश्ड उत्पादों, स्टोर्स एवं स्पेयर्स और कच्चा माल आदि की माल-सूची में कमी करना।

उपर्युक्त सभी कदमों के परिणामस्वरूप सेल के वित्तीय निष्पादन में सुधार हुआ है।

*****